मई , २०२५ | अंक - आठ

वर्धा डायरी

(मासिक ई - पत्रिका)

अंतरराष्ट्रीय मज़दूर दिवस, प्रेस स्वतंत्रता दिवस , जैव विविधता दिवस , अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस पर एकाग्र

महिला,मज़दूर और मीडिया

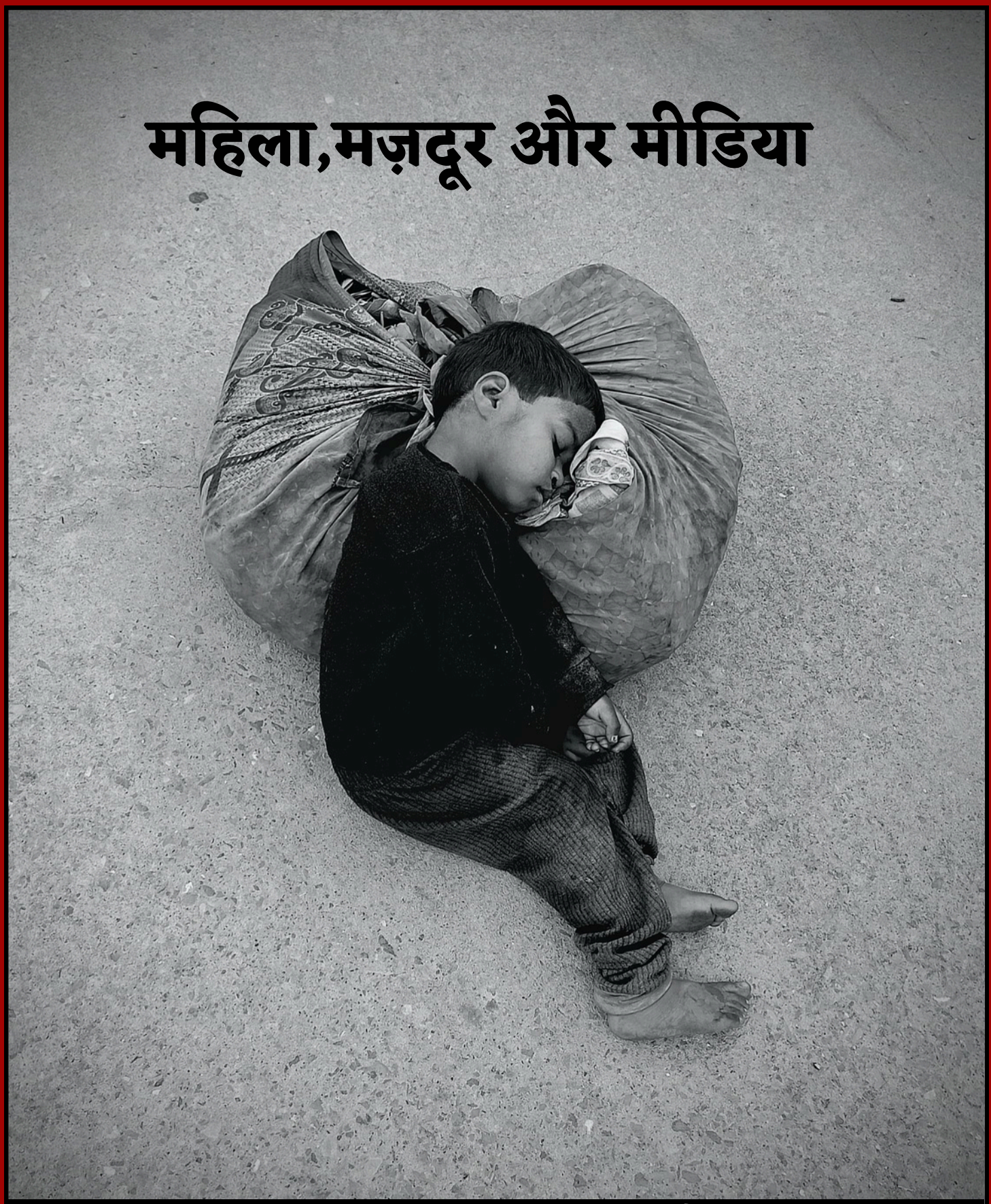

संपादन - अभय दुबे

आवरण चित्र - राहुल कुमार , ख़ुशी खान

इस अंक में विशेष - प्रो. जी. गोपीनाथन से साक्षात्कार | कविताएँ - रुपम मिश्र , धीरेन्द्र धवल | कहानी - श्रद्धा श्रीवास्तव , आकांक्षा सिंह, अमन कुमार , सतीश चन्द्र मिश्र | फिल्म समीक्षा - जितेन्द्र बिसारिया | आवरण कथा - अंकिता पटेल | जन-संपादकीय - शानु झा |

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विद्यार्थियों का उपक्रम

(छायाचित्र - बंशीलाल परमार , मंदसौर , मध्य प्रदेश)

तुम्हारे पसीने की एक बूंद

तुम्हारे पसीने की एक बूंद
भारी है सारे समुद्रों पर
भारी है शबनम की
जन्म पीड़ा पर
उजली है शबनम की
चमक और सुखानुभूति से

तुम्हारे पसीने की एक बूंद
स्वाति नक्षत्र की बूंद से अधिक
महत्व की है
वह ब्रह्माण्ड तक की प्यास
बुझा सकती है

तुम्हारे पसीने ने
मांगा है जब-जब जवाब दिशाओं से
हर दिशा हुई लाजवाब
सूर्य भी जा चुका शर्म से
धरती का ओढ़ कर आंचल

साथियो, मजदूरों के पसीने की
एक बूंद से है कायम
तमाम सागरों की गर्जना
तमाम नदियों की खिलखिलाहट
तमाम बादलों का अट्टहास
तमाम फलों की सुगंध और मुस्कराहटें

तमाम चराचर प्राणियों के प्रेम
सूरज ,चाँद ,तारों की रोशनी
साथियो ,मजदूर के पसीने
को करो उठकर सलाम
क्यों कि उसके पसीने से जुड़कर
बनी है ये दुनिया

~ सुसंस्कृति परिहार

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(पूर्ण रूप से विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका)

वर्धा डायरी
(मासिक ई - पत्रिका)

दो शब्द

'वर्धा डायरी' ई-पत्रिका महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जा रही है। यह पत्रिका पूर्ण रूप से एक खुला मंच है, जहां आप अपने रचनात्मक विचारों को पाठकों के साथ साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका को शुरू करने का उद्देश्य यही है कि हिंदी विश्वविद्यालय परिसर में अध्ययनरत छात्रों के भीतर छिपी रचनाधर्मिता को जागृत कर, उन्हें सबके सामने प्रस्तुत किया जाए। हिंदी विश्वविद्यालय अपने जिन उद्देश्यों को लेकर स्थापित किया गया था, उसको पूरा करने में हमारा एक छोटा सा योगदान है। हम चाहते हैं कि आप अपनी रचनाओं से एक सकारात्मक वातावरण स्थापित करने में हमारी मदद करें। हमारा आपसे आग्रह है कि आप अपनी जिन भी रचनाओं को भेजें वो आपकी मूल हों । पत्रिका को हम सिर्फ़ विश्वविद्यालय परिसर तक सीमित न करके, सभी लेखकों के लिए खोल रहे हैं। आइये महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम की कड़ी का एक हिस्सा बन इस उपक्रम को आगे बढायें। इसी आशा के साथ आपकी रचनाओं का स्वागत है ।

महात्मा गांधी की कर्मभूमि वर्धा से प्रकाशित
साहित्यिक - सांस्कृतिक मासिक ई - पत्रिका

वर्धा डायरी

प्रकाशक/ प्रधान संपादक

विवेक रंजन सिंह

vivekranjan749@gmail.com

उप - प्रधान संपादक

अभय दुबे

संपादक

गोविन्द कुमार

सह - संपादक

प्रियांशु कुमार
हर्ष आनंद
शिया गोस्वामी
रागिनी

परामर्श एवं तकनीकि मार्गदर्शक

राखी (पी.एच.डी.)
डॉ. धीरेन्द्र प्रताप सिंह 'धवल'
लाल बहादुर यादव

प्रिय पाठक मित्रों ,

पत्रिका का यह प्रकाशन पूर्ण रूप से विद्यार्थियों द्वारा ही किया जाता है . इस प्रकाशन के पीछे हमारा मात्र यही प्रयास है कि आपके विचारों को एक मंच दिया जा सके . हम आपसे सहयोग की अपेक्षा रखते हैं . आप हमें आर्थिक सहयोग भी कर सकते हैं. आर्थिक सहयोग हेतु नीचे दिए गये UPI पर आप राशि भेज सकते हैं . आपका लघु सहयोग हमारे प्रयास को नई उर्जा प्रदान करेगा .

UPI आई .डी . - 9140586154@axl (गूगल पे / फ़ोन पे)

पत्रिका के सभी अंक नॉट नल पर उपलब्ध हैं . अब तक प्रकाशित सभी अंकों को पढने के लिए विजिट करें www.notnul.com

पत्रिका का पी.डी.एफ. प्राप्त करने के लिए आप दिए गए बार कोड या यू.पी.आई. पर राशि भेज सकते हैं . आप हमारे सदस्य भी बन सकते हैं , जिससे आपको समय समय पर प्रकाशित अंक उपलब्ध कराए जा सकें .

सदस्यता शुल्क : (संस्थान , शिक्षक , शोधार्थी)

मासिक - तीस रुपये मात्र

वार्षिक - तीन सौ रुपये मात्र

सदस्यता शुल्क : (विद्यार्थी)

मासिक - दस रुपये मात्र

वार्षिक - सौ रुपया मात्र

Vivek Ranjan Singh

(लेखकों को पत्रिका के अंक मुफ्त में उपलब्ध करवाए जायेंगे .)

संपादकीय संपर्क
संपादक - वर्धा डायरी
राजगुरु छात्रावास , कक्ष संख्या - 28
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट - हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स,
वर्धा 442001 (महाराष्ट्र)
ई-मेल - wardhadiary@gmail.com

आवरण चित्र - राहुल कुमार , खुशी खान
पृष्ठ सज्जा - अभय दुबे

© प्रकाशकाधीन

• संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक व अव्यवसायिक

प्रारंभ वर्ष - सितंबर , 2024

मुद्रक - स्व - प्रकाशित ई पत्रिका

(प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली सामग्री अथवा रचनाओं के प्रकाशन हेतु संपादक का निर्णय ही मान्य होगा। प्रकाशित रचनाओं की रीति - नीति या विचारों से संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रकाशक की पूर्ण जिम्मेदारी होगी।)

सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक / प्रकाशक

(पत्रिका पूर्ण रूप से अभी ई - पत्रिका है और इसके प्रिंट करने या उसके वितरण की इजाज़त अभी नहीं है। किसी विशेष स्थिति में प्रकाशक के अनुमति से ही इसके प्रिंट निकलवाए जा सकते हैं। यदि बिना प्रकाशक की अनुमति से कोई इसके प्रिंट को निकलवाता है और उसका वितरण करता है तो कानूनी कार्यवाई हेतु वह स्वयं ज़िम्मेदार होगा। प्रेस व रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अनुसार जब इसका आई.एस.एस.एन./ आर.एन.आई. अंक प्राप्त हो जायेगा, तभी इसे प्रिंट माध्यम में वितरण किया जा सकता है।
किसी भी आपत्ति या विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र वर्धा , महाराष्ट्र होगा।)

मई , २०२५ | अंक - आठ

वर्धा डायरी

मासिक ई - पत्रिका

दुनिया में अभी तक जितना लिख दिया गया उतना हमारे लिए पर्याप्त नहीं होना चाहिए । हम पढ़ पा रहे हैं इसका मतलब है हमसे पहले किसी ने लिखा है । हमें भी इसलिए लिखना पड़ेगा कि भावी पीढ़ियाँ यह जान पायें कि हमारा दौर कैसा था । लिखने से सिर्फ़ हम ज़िंदा नहीं रहते बल्कि हमारे साथ ज़िंदा रहता है हमारा समय और समाज ।

विवेक रंजन सिंह

अनुक्रमणिका

आवरण कविता / सुसंस्कृति परिहार , अभय दुबे

1 . **अपनी बात** / प्रधान संपादक की कलम से / विवेक रंजन सिंह / **08**

2. **संपादकीय** / मीडिया को अपनी भूमिका का पुनर्मूल्यांकन करना होगा / अभय दुबे / **10**

3. **साक्षात्कार** / वर्धा से मुझे बहुत प्रेम और अपनापन मिला / प्रो .जी.गोपीनाथन / **13**

4. **संस्मरण** / जब मैं छोटा था / गोविंद कुमार / **15**

5. **जनसंपादकीय**। घरेलू हिंसा से निपटने के लिए सामाजिक बदलाव की ज़रुरत । शानू झा /**17**

6. **कविता** / दरिंदगी की दरार में दबी बेटियां / कुलदीप कुमार/**18**

7. **कहानी** / लालसा / श्रद्धा श्रीवास्तव/ **19**

8. **कविता** / मजदूर का सूरज / आरती मोहित शर्मा / **22**

9. **विमर्श** / पारिवारिक परिवेश से दूर होते बच्चे / राहुल कुमार / **23**

10. **विचार** / मीडिया के बदलते स्वरुप से ग्रामीण इलाकों पर प्रभाव / कुमारी नंदनी / **24** । चौथा स्तंभ या सत्ता का प्रवक्ता ? एक मीडिया छात्र की पीड़ा / प्रियांशु कुमार / **25**

11 .**फ़िल्म समीक्षा** / महत्वाकांक्षा के बीच पिसती मित्रता और उसके अंतर - बाह्य संघर्षों का सर्वश्रेष्ठ चित्रण : द बंशीज़ ऑफ इनिशेरिन / जितेंद्र बिसरिया/ **27**

12. **विविध** । मां एक सच्ची मार्गदर्शक। गोवर्धन दास “राजा बाबू” / **34** । पढ़े - लिखे मज़दूर : डिग्री से पेट नहीं भरता / रागिनी / **35**

13. **कविता** / आसान नहीं है एक नारी का सफ़र। रागिनी / **36**

14.**विचार**/ नारीवाद और पुरुष विमर्श का संतुलित दृष्टिकोण । कृष्ण कुमार / **37**

15. **कहानी** / निर्मला की ज़िंदगी। अमन कुमार / **38** । कविता / थका - थका सा घर आता है । शायशी / **41**

16. **कविता** / रुपम मिश्र की कविताएं / **42** । धीरेन्द्र धवल की कविताएं / **45** । बेटियां ./ अमन कुमार / **47**

17. **विमर्श** / वर्तमान समय में मज़दूर और मज़दूरी : एक प्रासंगिक विमर्श। अभिषेक कुमार पाठक / **48**

18. **कविता** / चरित्र हूँ , चरित्र हूँ , चरित्र हूँ / आदर्श ठाकुर । मां एक लफ़्ज़ / कुलदीप कुमार /**49**

19. **कहानी** / शैलू / आकांक्षा सिंह / **50**

20.**आवरण कथा** / तीन चेहरे, मीडिया , मज़दूर और महिला : समाज की अनकही धुरी / अंकिता पटेल / **51**

21. **कविता** / हर चीज इतनी अच्छी नहीं है क्या ?/ अरुण कुमार सिंह / **55**

22. **विचार**/ चौथा स्तंभ हिलता हुआ नज़र आ रहा / आशीष चंद्र / **56** । ग्रामीण इलाकों में महिला समानता की स्थिति कब सुधरेगी / प्रियांशु कुमार / **57**

23. **विमर्श** / प्रेम , विवाह और स्वतंत्रता : स्त्री - पुरुष के रिश्तों की पुनर्रचना / राहुल इलाहाबादी/ **58**

24. **विचार** / जब सच बोलना गुनाह बन जाए : कौन बोलेगा पत्रकारों के हक़ में / स्नेहा राज / **62**

24. **कहानी** / कथा श्रोताओं की खोज / डॉ सतीश चन्द्र मिश्र / **63**

चित्र कथा / बचपन किताबों में हो , न कि ईंटों के ढेर पर / हर्ष आनंद / **65**

25. **शोध आलेख** / नारी चेतना के आविर्भाव का अलिखित इतिहास / अजय पोद्दार ‘अनमोल’ / **66**

शुभ - संदेश

पत्रिका का प्रकाशन अच्छा कार्य है ।मै आप सभी (सम्पादन मंडल) को शुभकाननाएं ही दे सकता हूँ । यह अच्छा कार्य है । मैं यही चाहता हूँ कि पत्रिका के सामने राष्ट्रीय व विश्व दोनों परिप्रेक्ष्य होने चाहिए , तभी इसकी सार्थकता सिद्व होगी । वर्धा मेरे जीवन की खूबसूरत यादों की जगह रही है । मुझे गांधी की इस धरती से काफी प्रेम और सहयोग मिला । वर्धा सीखने , समझने और अनुसंधान करने की जगह है । रचनात्मक क्रियाकलापों को बढ़ावा देने के लिए जनसंचार विभाग के छात्रों को आगे आना चाहिए । इस पत्रिका के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकानाएं ।

श्री जी . गोपीनाथन **(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)**

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी समाज की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के छात्र भाषा और साहित्य दोनों के क्षेत्र मे सक्रिय रहे हैँ यह खुशी की बात है कि विश्वविद्यालय परिसर से एक ई पत्रिका (वर्धा डायरी)की शुरुआत होने जा रही है। पत्रिका से जुड़े छात्रों को इसके लिये बधाई और मेरी शुभकामनायें।

श्री विभूति नारायण राय **(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)**

प्रकाश और अंधकार का युग्म एक सतत और अनिवार्य संघर्ष की याद दिलाता है । भाषा प्रकाश का ही एक रूप है जिससे दुनिया अर्थवान हो उठती है और उसे भी अंधकार का प्रतिरोध करना पड़ता है । पर भाषा की शक्ति प्रकाश से थोड़ा आगे बढ़ती है क्योंकि वह वर्तमान से आगे बढ़ कर भविष्य रचती रचाती चलती है । भाषा के गर्भ में पलती रचनाशीलता युग का निर्माण करती है । हमारी शुभकामना है कि " वर्धा डायरी " काल की संवेदना को थामे भाषा के सामर्थ्य की वाहिका बने । लोक तंत्र की प्राण नाड़ी है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डायरी उसे जीवित करने का उद्यम कर रही है । स्वराज की भूमि वर्धा से आरंभ हो रही विचारों के स्वराज की यह यात्रा मंगलमय हो ।

श्री गिरीश्वर मिश्र **(पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)**

शुभ - संदेश

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय से मेरा संबंध बहुत पहले का है, जब प्रथम कुलपति अशोक वाजपेयी जी ने एक अकादमिक गोष्ठी इलाहाबाद में आयोजित की थी । डॉक्टर गोपीनाथन के कार्यकाल में भी आयोजनों में रवीन्द्र कालिया और मैं बराबर आमंत्रित रहे।सबसे स्फूर्तिदायक समय कुलपति श्री विभूति नारायण राय का था । उन्होंने त्रैमासिक इंग्लिश पत्रिका 'हिंदी' को पुनर्प्रतिष्ठित किया । मुझे पौने पांच वर्ष इसके संपादन का अवसर मिला।बहुत खास रचनाएं अनुवाद में प्रकाशित करने का सुख प्राप्त हुआ ।

विश्वविद्यालय का परिसर हिंदी साहित्य की महक से भरा हुआ है । बड़े बड़े विद्वान व साहित्यकार यहंसमे समय पर शोभा बढ़ाते रहे हैं। यहां की वीथियों के नाम साहित्य मनीषियों पर हैं। नागार्जुन सराय का शांत,सुरम्य वातावरण,स्वच्छ सादा भोजन और खुशनुमा मौसम प्राणदायी है ।

मेरी शुभकामनाएं लें । वर्धा विश्वविद्यालय प्रति वर्ष प्रगति के उत्कर्ष पर रहे और विद्यार्थियों में अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति अनुराग विकसित करे ।

ममता कालिया
(वरिष्ठ साहित्यकार)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय् वर्धा के छात्रों द्वारा द्वारा शीघ्र प्रकाशित की जा रही ई पत्रिका वर्धा डायरी के लिए मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस डायरी के प्रकाशन से छात्रों के बीच साहित्यिक रचनाओं और अध्ययन पठन-पाठन के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और इन्हीं के बीच से भविष्य के लेखक उभरकर सामने आएंगे। रचनात्मकता का एक पहलू यह भी है कि यह छात्रों को एक श्रेष्ठ और मानवीय संवेदना से युक्त विवेकशील नागरिक बनाएगी।मेरी ओर से समस्त संपादक मंडल को अनंत शुभकामनाएं।

श्री अशोक मिश्र (कहानीकार व पूर्व संपादक बहुवचन पत्रिका (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

वर्धा डायरी

मई , २०२५ | अंक - आठ

मासिक ई - पत्रिका

कभी लौ धीमी पड़ी तो कभी भभक गई , मगर कुछ कंधों ने संभाल लिया

• विवेक रंजन सिंह

हमने यह बिलकुल भी नहीं सोचा था कि हम इस पत्रिका को नियमित निकाल पायेंगे . हालाँकि नकारात्मक होना कोई अच्छी बात नहीं मगर किसी कार्य को , खासकर पत्रिका जैसे उपक्रम के प्रकाशन में यह बात मन में उठना स्वाभाविक ही है . सितम्बर २०२४ अच्छे से याद है , जब कुछ साथियों के साथ हमने हिन्दी विश्वविद्यालय परिसर स्थित गांधी हिल्स पर पत्रिका के प्रवेशांक का विमोचन किया था . हम सब उस दिन ऐसी ऊर्जा से भरे कि अब तक वह ऊर्जा लगातार बढ़ ही रही है . ऊर्जा जब भी कम होने लगती है तो कोई न कोई स्थिति परिस्थिति ऐसे सामने आ जाती है कि बुझते हुए दिए को तेल मिल जाता है . कभी कभी तो इतना ईधन मिल जाता है कि भीतर की ज्वाला आग जैसे भभक उठती है .

मीडिया जगत में काफी सालों से सक्रिय हूँ , मगर वर्धा के इस हिन्दी विश्वविद्यालय परिसर में आने के बाद जिन कामों को कर पा रहा हूँ वह अन्यत्र कहीं संभव न था . मैं यह पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि वर्धा की इस धरती को महात्मा गांधी और विनोबा भावे जैसे महान संतों ने अपने विचारों और कर्मों से सिंचित किया है . जिसका फल हमें भी प्राप्त हो रहा है .

यह आठवां अंक है . मई माह का यह अंक काफी समृद्ध है . महिला , मज़दूर और मीडिया पर केन्द्रित इस अंक को तैयार करने में हमारे कई नए साथियों ने सहयोग किया है . राहुल कुमार और ख़ुशी खान की तस्वीर से हमने आवरण तैयार किया है . मंदसौर से वरिष्ठ छायाकार बंशीलाल परमार जी ने कई तस्वीरें भेजीं जिन्हें हमने भीतर के पृष्ठों में समायोजित किया है . हमें बेहद ख़ुशी हुई कि हमारी पत्रिका के पाठक बढ़ रहे हैं और अब दूर दूर से लोगों का सहयोग मिल रहा है .

वर्धा में मेरे दो साल पूरे होने को हैं , ऐसे में कई बार यह ख्याल आया कि वर्धा से बाहर जाने पर पत्रिका के संपादन का कार्य कैसे पूरा होगा, मगर मुझे कुछ ऐसे साथी मिल गए हैं जो इस कार्य को आगे ले जाने में सक्षम हैं . अभय दुबे , जो कि पत्रिका के शुरुआती समय से साथ हैं , अब इस पत्रिका के उप - प्रधान संपादक हैं . इस अंक के संपादन में उन्होंने दिन रात मेहनत की है . हिन्दी विश्वविद्यालय में जनसंचार की पढ़ाई कर रहे कुछ नए युवा साथी भी लगातार संपादन में सहयोग कर रहे हैं . प्रियांशु कुमार , हर्ष आनंद , रागिनी और शिया ने भी इस बार लगन से काम किया है . सभी ने अपने परिचितों में वर्धा डायरी को निःस्वार्थ भाव से पहुंचाया है और सबकी अच्छी प्रतिक्रियाएं भी आई हैं . अब आगे का दारोमदार इन्हीं युवा साथियों के कंधे पर है . मैं चाहता हूँ कि यह पत्रिका किसी विशेष विचारधारा का मुखपत्र न बनकर लोकतान्त्रिक मूल्यों के विमर्श की पत्रिका बनें . अब तक हम इस पत्रिका को निर्विवाद ढंग से चला रहे हैं . यह पत्रिका उस रचनात्मकता को उभारने और बढाने का उपक्रम है , जिससे हम पत्रकारिता के मूल धर्म को समझ और जान पायें . हालाँकि पत्रिका को लेकर कई प्रकार के दोषारोपण किये गये और लगातार किये भी जा रहे हैं मगर इससे अभी तक कोई फर्क नहीं पड़ा है बल्कि पत्रिका का काम और तेज गति पकड़ लिया है . वर्तमान समय ऐसा है कि हम आलोचना और असहमतियों से कोसों दूर भागने लगे हैं , जो कि स्वस्थ समाज के निर्माण में बाध्यकारी साबित हो सकता है . सही बताऊं तो अब तो काम करने की जिजीविषा और भी अधिक होने लगी है . मैंने और अभय ने मिलकर इसी साल के जुलाई माह से एक और त्रैमासिक ई - पत्रिका शुरू करने की योजना बनाई है . गांधी की इस धरती पर भले ही साल के ज्यादातर महीनों में रहना दूभर है , मगर यहाँ की आबोहवा में कुछ ऐसा है जो आपको कुछ न कुछ रचने और रचनात्मक करने की प्रेरणा देता है .

समय बहुत जल्द बीत गया . इस व्यस्तता के चलते मुझे अपना समय कुछ जल्दी ही बीतता हुआ महसूस हुआ . आगे का पता नहीं कि कहाँ रहूंगा मगर इन दो सालों में इस विश्वविद्यालय ने जो कुछ सिखाया , वह सब कुछ इसी के चरणों में समर्पित करता हुआ जा रहा हूँ . फेसबुक से वर्धा डायरी नामक ब्लॉग लिखते लिखते आज यह पत्रिका का रूप ले चुकी है , मैं यह सोचकर गदगद हो जाता हूँ . मेरे साथियों के बिना यह संभव न था . मेरा कभी किसी व्यक्ति और विचारधारा से दुराव नहीं रहा , मैनें सभी को

*(अनुस्वार , हलंत और अर्धाक्षर की त्रुटियाँ फॉण्ट के कारण हैं)

साथ लेकर चलने का पूरा प्रयास किया और बहुत हद तक इस प्रयास में मैं सफल भी रहा . हम पत्रिका के हर एक अंक को बेहतर से बेहतर रूप में प्रकाशित करने का काम कर रहे हैं . यह संपादन आपको आने वाले अंकों में और भी अधिक आकर्षित करेगा . हम बेहतर और विमर्श करने के योग्य विषयों पर पत्रिका के अंक निकाल रहे हैं जो आपको सामाजिक , सांस्कृतिक और साहित्यिक रूप से रचनात्मक बना पाए . हम यह मानते हैं विश्वविद्यालय ही वो जगह होती है जहाँ रचनात्मकता के फलने फूलने की उन्मुक्त जगह होती है . ऐसे में हम हर विचार और मत को एक साथ लेकर नई परम्परा का विकास कर सकते हैं , जो आने वाले युवाओं के लिए मार्ग प्रशस्त करने का काम करेगा .

हमने इस अंक का जो आवरण विषय रखा है वह है - महिला , मज़दूर और मीडिया . वर्तमान समय में इन तीनों की ही दशाएं चिंतनीय हैं . आज भी महिलाओं को कहीं न कहीं समाज में असुरक्षा बोध और असमानता का दंश झेलना ही पड़ता है . समाज का मजदूर तबका आज भी अपने मेहनत के बदले पूरी मजदूरी पाने को तरस रहा है . आदिवासियों के जंगल छीने जा रहे हैं और उन्हें अन्यत्र बसाए जाने का लालच दिया जा रहा है . आज के समय के आंकड़े बताते हैं कि लाखों आदिवासी आज अपनी जमीनों से बेदखल हो चुके हैं . सरकार को इनकी बिलकुल भी सुध नहीं हैं . सरकारें आदिवासियों के लिए आवाज उठाने वालों को तरह तरह के नामों से परिभाषित कर अपने दमन पर पर्दा डालने का काम करती है . यह समय ऐसा है कि हमें कलम की ताकत को पहचानना होगा . हमें अपने भारत की संप्रभुता और एकता को बचाए रखने के लिए संविधान और कानून की मर्यादा रखते हुए लिखना और बोलना ही होगा .

मेरे पाठकों , इस अंक के साथ मैं अपने मन की एक और बात आप सभी से साझा करना चाहता हूँ . हालाँकि हमारी बात कोई अलग बात न होकर विभिन्न समाचार पत्र और पत्रिकाओं के मेहनती, जुझारू और समर्पित संपादकों के जैसी ही है . हम धीरे धीरे दसवें अंक की ओर अग्रसर हो रहे हैं . अभी हमारे पास नौजवान साथियों का साथ है . आप यह बेहतर जानते हैं कि पत्र - पत्रिकाओं को खरीदने और पढने का दौर अब पहले जैसा नहीं रहा . बहुत कम लोग हैं जो अब पत्र पत्रिकाओं की खरीदारी करते हैं . इसका एक बड़ा कारण पारंपरिक पत्रकारिता का बदलता स्वरुप है . डिजिटल और वेब मंचों के आ जाने से लोगों के लिए पठन पाठन की सामग्रियां मिलना आसन हो गया है . हमनें भी यही सब सोचकर इस पत्रिका को आगे के दिनों में अभी फिलहाल डिजिटल ही रखने का निर्णय लिया है . फिर भी हमारे सामने कई चुनौतियाँ हैं जिन्हें हम आप सब के सहयोग से निपट सकते हैं . ऐसे उपक्रमों को सतत चलाने के लिए हमने थोडा बहुत अर्थ की अवश्यकत पड़ती है . साथियों का मनोबल न टूटे और वो भी अपने समय के बदले कुछ अर्जन कर पायें , यह हमारा पहले दिन से ही उद्देश्य रह है . हमारा आपसे निवेदन है कि आप सब से जो भी संभव हो पायें हमारी आर्थिक मदद अवश्य करें . हमने मदद भेजने हेतु बार कोड और यू.पी.आई. नम्बर ऊपर के संपादक मंडल पृष्ठ पर दे दिया है .

हम आप सभी पाठकों का आभार करते हैं जो हमारी पत्रिका को न सिर्फ़ पढ़ रहे हैं बल्कि अपनी खूबसूरत प्रतिक्रियाओं से हमारा मनोबल भी बढ़ा रहे हैं . पत्रिका को आप सबका प्रेम और सहयोग ऐसे ही मिलता रहा तो हम जल्द ही आपके मुखर स्वर का विश्वसनीय मंच बन पाएंगे . हम इस पत्रिका को एक ऐसे शिखर तक ले जायेंगे जहाँ से वर्धा और वर्धा की धरती में समाई रचनात्मकता को नया आयाम मिलेगा . तभी हम सही मायने में गांधी के सपनों का भारत निर्मित कर पाएंगे जहाँ हम समाज के वंचित,शोषित और सताए समाज की बात करेंगे . जहाँ हम गावों की बात करेंगे . हम गांधी के सर्वोदय और ग्रामोदय के सपनों को भी साकार कर पाएंगे .

मैं विशेष रूप से पुस्तक और पत्रिकाओं के विख्यात डिजिटल मंच नॉट नल का भी आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने वर्धा डायरी पत्रिका के प्रति विश्वास जगाते हुए हमारे अंकों को अपने डिजिटल मंच पर न सिर्फ़ जगह दी बल्कि हमारी पत्रिका से सम्बंधित रॉयालिटी का ब्यौरा भी हमसे साझा किया .

मित्रों , हम अगले अंक को फिर से महात्मा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित कर रहे हैं . इस बार का विषय है - बापू धाम से बापू कुटी . आपकी रचनाओं का इन्तेजार रहेगा .

*(अनुस्वार , हलंत और अर्धाक्षर की त्रुटियाँ फॉण्ट के कारण हैं)